	बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय **बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)** **Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)**

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 142 /2025) Year: 7th

जिला: बाँदा	**जारी करने की तिथि: 15.11.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ फ्रांसबीनए पालकए मूलीए मेथीए गाजरए शलजमए चुकंदरए लहसुनए सब्जी मटर तथा आलू की बुआई कर दें। ➢ बैगनए टमाटरए मिर्च व गोभी वर्गीय फसलों की रोपाई करें। नमी संरक्षण हेतु सुखी घास की पलवार प्रयोग करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	**शस्य.प्रबंधन** ➢ फसलों की समय पर बुआई सुनिश्चित करें। रबी फसलों की उपयुक्त समय पर बुआई सुनिश्चित करें । ➢ बुआई के लिए उन्नत किस्मों के बीजों का ही चयन करें। ➢ बीज हमेशा विश्वसनीय स्रोत से लेना चाहिए । ➢ बीजों की बुआई उपयुक्त नमी की दशा में तथा खादों–उर्वरकों की समुचित मात्रा के साथ करें।. ➢ बीजों की बुआई बीजोपचार के बाद ही करे . गेहूँ की फसल में एजोटोबेक्टर दुवारा बीज का उपचार किया जाना लाभदायक होता है । ➢ गेहूँ में फसलों की बुआई के दो–तीन दिन के भीतर पेंडीमिथलीन न।मक दवा का ३.3 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से उचित नमी की दशा में छिड़काव करनी चाहिए। इससे प्रारंभिक अवस्था में फसल– खरपतवार प्रतिस्पर्धा को कम किया जा सकता है । ➢ गेहूँ की खड़ी फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के ३० दिन बाद सल्फोसल्फ्युरोंन + मेत्सल्फ्युरोंन (टोटल) १६ ग्राम प्रति एकड़ की दर से १५० लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें । ➢ खरपतवारों के प्रभावी नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी का छिड़काव हमेशा फ्लैटफैन नाजेल (कट नाजेल) से करना चाहिए । ➢ दलहनी फसल में पेंडीमेथालिन 3.3 किग्रा. क्यूजलोफोप इथाइल १ किग्रा व्यापारिक तत्व या मेट्रीव्युजिन ३५० ग्राम व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव करें । ➢ केवल पेंडीमेथालिन 3.3 किग्रा व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव किया जा सकता है । ➢ मटर की फसल में खरपतवार के व्यापक नियंत्रण हेतु ओक्सीफ्लोरफेन नामक खरपतवार नाशी की ४०० से ४५० ग्राम व्यापारिक तत्व का बोआई के तीन

		दिन के भीतर ४०० से ५०० लीटर पानी में मिलाकर कट नाजेल की मदद से छिड़काव किया जाना लाभदायक रहता है । ➢ दलहनी फसलों में घास कुल के खरपतवार के नियंत्रण हेतु क्युजालोफोप इथाइल 5þ (टर्गासुपर) के 1000 ग्राम मात्रा का 500 लीटर पानी में घोल बनाकर 20– 22 दिन की अवस्था पर छिड्काव करें । ➢ आवश्यक्तानुसार खड़ी फसल में नमी बनाये रखने हेतु उचित सिंचाई का प्रबंध करना चाहिए । ➢ सरसों की फसल में विरलीकरण दुवारा पौधे से पौधे की दुरी १० से १५ सेमी सुनिश्चित करना चाहिए। **मृदा.प्रबंधन** ➢ अगर किसान भाईयों ने मृदा परीक्षण कराया है तो मृदा परीक्षण रिपोर्ट को कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों से समझ कर फसल में उसी अनुसार उर्वरकों का व्यवहार करें। ➢ बागवानी फसलों में पौधे की उम्र एवं आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। सामान्यतः प्रति पौधा प्रति वर्ष उम्र के अनुसार 100 ग्राम एन0 पी0 के0 मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। ➢ रबी की तिलहनी एवं दलहनी फसलों में गन्धक का प्रयोग क्रमषः 30 कि0ग्रा0 एवं 20 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से अवष्य करें। इस हेतु तत्वीय गन्धक अथवा सिंगल सुपर फॉस्फेट को गन्धक के स्रोत के रूप में चुनना चाहिए। 30 एवं 20 कि्रग्रा0 गन्धक हेतु 250 किग्रा0 एवं 165 कि्रग्रा0 सिंगल सुपर फॉस्फेट को क्रमषः प्रयोग करना चाहिए। 30 एवं 20 कि्रग्रा0 गन्धक हेतु 33 किग्रा0 एवं 22 किग्रा0 तत्वीय गंन्धक का क्रमषः प्रयोग करना चाहिए। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्व प्रबन्धन करते रहे। ➢ दलहनी फसलों की बुवाई में आधारीय उर्वरक के रूप में 50 किग्रा0 डी ए पी एवं 10 कि0ग्रा0 एम ओ पी का प्रति एकड के दर से प्रयोग करना चाहिए। ➢ सिंचित गेहूँ में पोषक तत्व की आवष्यकता सामान्यता 120 : 60 : 40 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर होती है। इस हेतु 130 कि0ग्रा0 डीएपी, 210 कि0ग्रा0 यूरिया एवं 67 कि0ग्रा0 एमओपी कि आवष्यकता होती है। डीएपी एवं एमओपी को आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए। ➢ मौसम के प्रतिकूल वर्षात के कारण खेतों में अधिक नमी की बजाय उपयुक्त नमी होने पर ही बुवाई तथा आधारीय उर्वरकों का प्रयोग करें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ पशुओं को सूखे, हवादार एवं साफ जगह पर रखना चाहिए। ➢ गायो का टीकाकरण करायें तथा खुरपका मुँहपका रोग के लिए भैंसो तथा बकरियों को टीका लगवाएं। ➢ जानवरों में टिक्स और माइट्स को नियंत्रित करने के उपाय लागू करे, जिससे पशुओ की उत्पादकता उच्च स्तर पर बनी रहे। ➢ पोल्ट्री शेड मे मुर्गीयो की बिछावन को गीला होने पर बदल दे जिससे उनमे बिमारियो का खतरा न हो। ➢ दुधारू पशुओ की उत्पादकता को बनाये रखने तथा प्रजनन सम्बन्धी समस्याओ से बचाव हेतु प्रति पशु 50 ग्राम खनिज मिश्रण देंवे। ➢ पशुओ की शारीरिक आवश्यकताओ हेतु एवं पोषक तत्वों की आवश्यकता के अनुसार हरा चारा 15 किग्राध्पशुधदिन तथा दाना मिश्रण उनकी आवश्यकता के अनुसार प्रदान करे।

		➢ मौसम की स्थिति को देखते हुए पशुओं में एचएस रोग, लंगड़ी बुखार, खुरपका और मुंहपका रोग फैलने की संभावना है, नियंत्रण के लिए पशुओं को टीका लगवाएं। ➢ नवजात पशुओं को बारिश एवं ठण्डी हवा से बचाएं तथा उन्हे सूखे व साफ फर्श पर बांधे।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ ब्यूवेरिया बैसियाना 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–75 किग्रा0 सड़ी हुई गोबर की खाद में मिला कर 8–10 दिन छाया मे रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व अन्तिम जुताई के समय खेत में मिला देने से भूमिगत कीटों तथा दीमक व सफेद गिडार कीट का प्रबन्धन किया जा सकता है। नीम की खली 10 कु0 प्रति हे0 की दर से बुवाई से पूर्व मिलाने से खेत में दीमक के प्रकोप में कमी आती है। ➢ राई/सरसों में आरा मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु सिंचाई करें व मैलाथियान 5 प्रतिशत डी0पी0 की 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से खेत में बिखेरें। क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करें। ➢ सब्जियों में (टमाटर, बैंगन, फूलगोभी व पत्तागोभी) शीर्ष एवं फल छेदक एवं फूलगोभी, पत्तागोभी में डायमंड बैक मोथ की निगरानी हेतु फेरोमोन प्रपंच 3–4/एकड़ लगाए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ नवम्बर के दूसरे पखवाड़े में आर्द्रता में कमीए हल्की सर्दी और सुबह–शाम ओस पड़ने के कारण रबी फसलों में रोगों की प्रारंभिक अवस्थाएँ दिखाई देने लगती हैं। इस समय उचित निगरानी और समय पर छिड़काव से रोगों को नियंत्रित किया जा सकता है। ➢ गेहूँ ➢ संभावित रोग: ➢ पत्ती धब्बा

		➢ जंग पीली/काली जंग ➢ ढीली झुलसा ➢ प्रबंधन: ➢ खेत में नमी संतुलित रखेंए लंबा समय पानी न भरने दें। ➢ पत्ती धब्बा दिखने पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। ➢ पीली जंग के प्रारंभिक लक्षण (पीली धारियाँ) दिखाई दें तो प्रोपिकोनाजोल 1 मिली/लीटर का छिड़काव करें। ➢ बीजोपचार रहित खेतों में ढीली झुलसा आने पर रोगग्रस्त बालियों को नष्ट करें। ➢ सरसों ➢ संभावित रोग: ➢ अल्टरनेरिया ब्लाइट ➢ श्वेत रतुआ ➢ पत्ती धब्बा ➢ प्रबंधन: ➢ पत्तियों पर भूरे/काले धब्बे दिखते ही मैनकोजेब + कार्बेन्डाजिम / 2 ग्राम/लीटर छिड़काव करें। ➢ श्वेत रतुआ की प्रारंभिक अवस्था में मेटालेक्सिल + मैनकोजेब / 2 ग्राम/लीटर छिड़काव लाभदायक। ➢ खेत में जलभराव न होने दें। ➢ चना ➢ संभावित रोग: ➢ ब्लाइट (काली झुलसा) ➢ फ्यूजेरियम विल्ट ➢ प्रबंधन: ➢ ब्लाइट के प्रारंभिक लक्षणों पर क्लोरोथैलोनिल 2 ग्राम/लीटर छिड़काव करें। ➢ पौधों का पीला पड़ना/मुरझाना दिखे तो रोगग्रस्त पौधों को हटाएँ और खेत में अधिक नमी रोकें। ➢ ट्राइकोडर्मा 5 ग्राम/किलो बीज या 2 किलो/एकड़ जैविक खाद में मिलाकर प्रयोग करें। ➢ सब्ज़ियाँ (टमाटरए मिर्चए गोभी वर्ग) ➢ संभावित रोग: ➢ झुलसा ➢ बैक्टीरियल धब्बा ➢ डाउनी मिल्ड्यू

		➢ प्रबंधन: ➢ टमाटर व मिर्च में झुलसा रोग आने पर मेटालेक्सिल + मैनकोजेब या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड / 5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ पत्तियों के पीले पड़ने और नीचे से सूखने पर ट्राइकोडर्मा या बाविस्टिन 1 ग्राम/लीटर छिड़काव करें। ➢ गोभी वर्ग में डाउनी मिल्ड्यू पर मैनकोजेब 5 ग्राम/लीटर उपयोग करें। ➢ प्याज और लहसुन ➢ संभावित रोग: ➢ पर्पल ब्लॉच ➢ ट्विस्टर रोग ➢ प्रबंधन: ➢ पर्पल ब्लॉच पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें। ➢ अधिक नमी और सुबह की ओस से रोग तेजी से फैलता हैए इसलिए अच्छी वेंटिलेशन रखें। ➢ सामान्य परामर्श सभी किसानों के लिए ➢ ✓ खेत में जलभराव न होने दें। ✓ सुबह की ओस के बाद रोग तेजी से फैलते हैं–फसल की नियमित निगरानी करें। ✓ किसी भी छिड़काव के समय पानी की सही मात्रा (200 लीटर/एकड़) का अवश्य ध्यान रखें। ✓ छिड़काव सुबह 9 बजे के बाद या शाम 4 बजे के बाद करें। ✓ रोग प्रबंधन हेतु ट्राइकोडर्मा एवं जैविक कवकनाशक का भी उपयोग करें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**कुछ सामान्य ध्यान देने वाली बातें** ➢ फल पौधों का रोपण इस माह के मध्य तक पूरा करें। ➢ वायु अवरोधक बीजू पौधें इस माह में भी लगा सकते हैं। ➢ पहले से लगे वायु–अवरोधक वृक्षों की फैली शाखाओं को काट दें। ➢ मूलवृत पौधों से फुटान को ध्यानपूर्वक हर 15 दिन बाद हटा दें। ➢ छोटे पौधों को सीधा रखने के लिए बंछटी का सहरा दें। ➢ गमलों में खुदाई गहरी करें ताकि खरपतवार अच्छी तरह से गहराई से निकल सकें, परन्तु जड़ों को तथा तने को बचा लें।

		➢ नींबू प्रजाति के कमजोर पौधों में 50 ग्राम यूरिया सिंचाई के तुरन्त बाद प्रथम सप्ताह में दें। ➢ वाटर स्प्राउट तथा सकर्स को काट दे। कटे हिस्सों पर बोर्डेक्स पेस्ट का लेप करें। ➢ नये तथा पांच साल से कम आयु के पौधों में यदि चाहे तो चने की फसल ली जा सकती है। ➢ खुली सिंचाई हेतु फलदार वृक्षों में सिंचाई एक से सवा महीनें के अंतराल पर करें। ➢ पांच साल से ऊपर के बाग में गेहूं की फसल न करें। ➢ बाग में रोगग्रस्त गिरे हुए फलों को अवश्य निकाल कर फेंके। **आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ आम के बाग में जुताई करके खरपतवार नष्ट कर दें.। ➢ आम में परागण मधुमक्खियों द्वारा होता है ।अतः फल आने के समय कीटनाशक दवाओं का प्रयोग न करें अन्यथा फलन प्रभावित होती है । ➢ यदि पत्ती खाने वाले कीड़ें का प्रकोप दिखाई दे तो उसके नियंत्रण के लिए मोनोक्रोटोफॉस या क्वीनालफास दवा का 1.5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतराल पर 2 छिड़काव करें । ➢ आम के पौधों मे जहां गों्द निकलने के लक्षण दिखें उन्हे खूरच कर साफ करे तथा घाव पर बोरडेक्स दवा का लेप कर दें। ➢ आम के पेड पर यदि शाखाओं पर शीर्षरंभी क्षय बीमारी के लक्ष्ण दिखाई दें तो उन शाखाओं को काटकर 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराईड के घोल का 15 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें। ➢ मिलीबग कीट आम के लिए घातक होते हैं.। इनसे बचाव के लिए पेड़ों के तनों के चारों तरफ पॉलीथीन की करीब 30 सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी बांध कर उसके सिरों पर ग्रीस लगा दें। **केले मे मुख्य कृषि कार्य** ➢ केले में यदि बीटल कीट दिखाई दे तो इसके रोकथाम के लिये डाइमेथोएट १.५ मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करे । ➢ लीफ स्पाट रोग के रोकथाम हेतु डाईथेन एम –45 के 2 ग्राम अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल 2–3 छिड़काव 10–15 दिन के अंतर से करना चाहिए। **पपीता मे मुख्य कृषि कार्य** ➢ नमी की कमी अथवा अधिकता के कारण फल उत्पादन कम हो जाता है । इसलिए जाड़े के दिनों में 15 दिन के अंतराल पर तथा गर्मी के दिन में 7–10 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए। जब पेड़ फल से लदा हो तो उस समय सिंचाई करना अति आवश्यक है। **अनार मे मुख्य कृषि कार्य** ➢ फल पकने के समय हल्की व नियमित सिंचाई करें ।

		➢ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करे । दूसरा छिड़काव इसके 15 दिन बाद करे। **बेर मे मुख्य कृषि कार्य** ➢ बेर मे फलूों व अपरिपक्व फलों के गिरने को रोकने व उत्तम गुणवत्ता युक्त अधिक उपज के लिए नियमित रूप से 10 से 12 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई करें । ➢ इस माह में बेर में नत्रजन की 50 प्रतिशत मात्रा जिसमें 500 ग्राम यूरिया प्रति पौघा फल मटर के आकार की अवस्था पर देकर तुरंत बाद सिंचाई करें । ➢ फल झड़ने की रोकथाम हेतु प्लानोफिक्स 4 मिलीलीटर प्रति 15 मिलीलीटर पानी में मिलाकर 15 दिन के अंतराल पर स्प्रे करना चाहिए। ➢ फल मक्खी के नियंत्रण के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. का 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करे । दूसरा छिड़काव इसके 15 दिन बाद करे। ध्यान रहे कि छिड़काव से 4 से 5 दिन बाद ही फलों की तुड़ाई करे। **आंवला मे मुख्य कृषि कार्य** ➢ फल सड़न को रोकने के लिए फल तोड़ने के 15 दिन पूर्व 0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम का छिड़काव करना चाहिए।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सफाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ जो किसान चंदन की नर्सरी उगाने के इच्छुक हैं, उन्हें नर्सरी बेड (उभरी हुई क्यारियाँ) तैयार करना चाहिए। नर्सरी बेड का आकार 10 मीटर X 1 मीटर होना चाहिए और ध्यान रखें कि रेत और मिट्टी का अनुपात 3:1 हो। ➢ वानिकी पौधशाला में पर्याप्त धूप बनाए रखने के लिए छायादार पेड़ों की निचली शाखाओं की छंटाई की जा सकती है।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय 6. डॉ मयंक दुबे	7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह 10. डॉ जगन्नाथ पाठक 11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार